मर्यादायें सुरक्षा कवच का कार्य करती है

संसार में जितनी भी वस्तुओं का निर्माण हुआ सबकी एक सीमित मर्यादा (दायरा) है। यदि उनकी मर्यादाओं के अन्दर रहकर कार्य किया जाये तो नि:संदेह ये सफलता दिलाने में मददगार साबित होती हैं। चाहे संस्कृति की मर्यादा हो, प्रकृति की मर्यादा, सामाजिक तथा पारिवारिक रिश्तों की मर्यादा हो, सभी चीजों की सुन्दरता इन्हीं मर्यादाओं में लिपटी रहती है। यहाँ तक कि बच्चे, बूढ़े तथा जवान की भी उम्र के हिसाब से मर्यादायें बनी हुई हैं जो उनके द्वारा किये जाने वाले कर्मों की मापदण्ड होती है। चिरातीत काल की बात लें तो दैवी घराने की मर्यादायें इतनी शक्तिशाली होती थी कि दो युगों तक मानव के लिए सम्पूर्ण सुख, शान्ति, सम्पन्नता का आधार बनी।

मर्यादाओं के सम्बन्ध में सबसे अच्छा उदाहरण 'लक्ष्मण रेखा' का देते है कि सीता यदि उस लक्ष्मण रेखा की मर्यादा का पालन करती तो रावण उसका हरण नही करता और न इतना बड़ा ग्रन्थ और पोथी-पतरे गढ़े जाते। राजा दशरथ की पत्नी केकैयी पत्नी की मर्यादा से बाहर नहीं आती तो राम को बनवास नही होता। यह तो रही बात अतीत की परन्तु वर्तमान में भी तरह-तरह की विषमताओं,मतभेदों और समस्याओं का उद्‌गम मर्यादाओं का उल्लंघन है। मनुष्य अपने स्वार्थ के वश तरह-तरह के उद्योगों, फैक्ट्रियों आदि का निर्माण, मोटर गाड़ियों, केमिकल पदार्थों का उपयोग धड़ल्ले से करता जा रहा है जिससे मानव रक्षक ओजोन परत में होता छिद्र समूचे मानव जाति के लिए एक विनााशकारी खतरा बनता जा रहा है।

यह तो रही प्रकृति की बात परन्तु मानव जाति का जो सबसे बड़ा रक्षक ईश्वर है, उसकी भी मानव जगत के लिए एक विधा है, संविधान है, एक अनवरत नियम है जिसकी परिधि में रहकर किये गये कर्म, संकल्पों से एक ऐसी निराली दुनियां का निर्माण हुआ था जिसकी छवि का आज तक विश्व में कीर्तिमान है। जहाँ शेर, गाय एक घाट पर पानी पीते थे, एक धर्म, एक राज्य, एक भाषा थी, वसुधैव कुटुम्बकम की भावना बलवती थी, सुख-शान्ति का साम्राज्य था और उच्च संस्कृति थी। परन्तु धीरे-धीरे मनुष्य दैहिक भान में आते-आते इन मर्यादाओं का उल्लंघन करता गया और इस कदर उल्लंघन किया कि समस्त जगत की आत्मा रूपी सीताओं का आज पांच विकारों रूपी रावण ने हरण किया है और वे शोक वाटिका में बैठ कर दु:ख और शोक के आगोश में समायी हुई है।

रावण (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) का प्रभाव ऐसे घने बादल की तरह छा गया है जिसकी अंधेरी छत्रछाया के जाल से कोई भी वंचित नहीं है। जब मर्यादाओं का बोलबाला था तो चहुँ ओर अमन चैन, सुख, शान्ति की जिंदगी थी, परन्तु आज मर्यादाओं के उल्लंघन के कारण दुख, अशान्ति का राज्य है। चारों तरफ निराशा और अज्ञान अंधकार है। परन्तु कितना भी घोर अन्धकार क्यों न हो, उसे दूर भगाने के लिए ज्योति की एक तीली ही काफी होती है। हम केवल प्रतिदिन होने वाले अंधकार की नहीं बल्कि उस अंधकार की बात कर रहे है जहाँ प्रकाश देने वाले नये-नये तकनीकी उपकरण विकसित कर मानव ने अपने रहने की जगह भरपूर उजाला तो कर लिया है किन्तु अपने अन्दर व्याप्त अज्ञान अंधकार नहीं भगा पाया है जिससे उसके साये में होने वाले अनेक कुकृत्य सामने आ रहे है जिनकी कोई सीमा नही रही है।

आजकल लोग अज्ञान से इतने घिरे हुए हैं कि वे एकदम असहाय, निर्बल, शक्तिहीन, उदास, हताश और गमगीन है। परन्तु हम उस शक्ति स्त्रोत, सर्वशक्तिवान, दयासिन्धु, कृपानिधान के वंशज है

जिनकी स्मृति-मात्र ही अनेको जटिल समस्याओं के समाधान के लिए काफी होती है। बशर्ते हम ईश्वरीय मर्यादानुसार चलें।

आखिर क्या है ईश्वरीय मर्यादा ?

ईश्वरीय मर्यादा का जहाँ तक सवाल आता है तो जिस प्रकार से एक लौकिक पिता की पुत्र के लिए मर्यादा होती है कि चोरी नहीं करना, ठगी नहीं करना, मातापिता की आज्ञा का पालन करना, सच्चाई, ईमानदारी आदि-आदि, यही मर्यादायें उस अलौकिक पिता की भी हैं लेकिन उसमे एडिशन केवल शुद्धता का है। पवित्र रहना, एक दूसरे के प्रति शुभ भाव, आदर भाव, परोपकार की भावना और हर कार्य करने से पहले ईश्वरीय स्मृति जरूर रखना। इन मर्यादाओं का पालन करने से आत्मा की सुषुप्त शक्तियां जागृत हो जाती है और उसके अन्दर एक ऐसे प्रकाश का निर्माण होता है जिससे उसके अन्दर व्याप्त अज्ञान अंधकार कोसों दूर चला जाता है और वह पूरे जगत के लिए एक प्रकाश स्तम्भ की भांति कार्य करता है।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स
www.bkvarta.com